इस पुस्तक के लेखक के मतानुसार वे सभी समस्याऐं जो सामूहिक रूप से समाधान के योग्य होती है उनके लिए दिया जाने वाला निर्देशन तथा व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए समूह में दिया जाने वाला निर्देशन सामूहिक निर्देशन कहलाता है।

2.7.1 सामूहिक निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्त्व

निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्त्व को हम निम्नांकित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट करेंगे -

i. **समय, श्रम एवं धन की बचत** - भारत जैसे देश में जहाँ संसाधनों का नितान्त अभाव होते हुए भी हमारी महत्वाकांक्षायें विश्व के सफल राष्ट्रों से होड़ लेने की है, सामूहिक निर्देशन अत्यन्त, महत्त्व पूर्ण हो जाता है। व्यक्तिगत निर्देशन में जहाँ हम एक-एक व्यक्ति को अलग-अलग निर्देशन प्रदान करते हैं वही सामूहिक निर्देशन में अनेक व्यक्तियों को एक साथ बैठाकर निर्देशन प्रदान करने से समय, श्रम एवं शक्ति की पर्याप्त बचत कर लेते हैं।

ii. **विद्यार्थी के सामान्य व्यवहार को सुधारने में सहायक** -निर्देशन प्राप्त करते समय व्यक्ति प्रायः अकेला होने के कारण असामान्य अनुभव करता है तथा अनेक सूचनाओं को देने में सकुचाता है। सामूहिक निर्देशन में अपने समूह के साथ होने के कारण उसका व्यवहार अपेक्षाकृत सामान्य रहता है तथा किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत सूचनायें दिये बिना निर्देशन प्राप्त कर लेता है।

iii. **नये व्यक्ति (उपबोध्य) को निर्देशन प्रदान करने में सरलता** -निर्देशन की प्रक्रिया एक

Scanned with CamScanner

और वह अपनी निजी बातें भी निर्देशक के समक्ष निःसंकोच रख देता है तथा अपनी समस्या का समाधान हो जाने तक निरन्तर निर्देशन प्राप्त कर सकता है।

3. **गोपनीयता** - व्यक्तिगत निर्देशन ही गोपनीयता बनाये रखने की एकमात्र गारन्टी दे सकता है इसमें निर्देशक और उपबोध्य के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति न होने के कारण उपबोध्य अपनी अत्यन्त निजी बातों को भी निर्देशक के समक्ष निःसंकोच रख देता है और वह अपनी समस्या का सही समाधान पाने के साथ-साथ उसे गोपनीय बनाये रखने में सफल होता है।

2.6.3 व्यक्तिगत निर्देशन के उद्देश्य

निम्नांकित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर व्यक्तिगत निर्देशन दिया जाना चाहिए-

i. **व्यक्ति के पारिवारिक समायोजन के लिए** - समाज व्यक्तियों के समूह से मिलकर बना है एक व्यक्ति समाज की ही तरह परिवार की भी एक इकाई होती है परिवार में समायोजन किये बिना वह समाज में समायोजन नहीं कर सकता अतः व्यक्तिगत निर्देशन का पहला महत्त्व पूर्ण उद्देश्य पारिवारिक समायोजन है।

ii. **व्यक्ति के सामाजिक समायोजन के लिए** - समाज में कुसमायोजित व्यक्ति सामाजिक विध्वंस के लिए उत्तरदायी होता है अतः व्यक्तिगत निर्देशन का दूसरा महत्त्व पूर्ण उद्देश्य व्यक्ति का सामाजिक समायोजन करना है।

iii. **व्यक्ति की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति**- प्रत्येक व्यक्ति की शैक्षिक आवश्यकतायें अन्य व्यक्तियों से भिन्न होती है अतः व्यक्तिगत निर्देशन के द्वारा उसकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ती की जाती है।

2.7 सामूहिक निर्देशन: अर्थ एवं परिभाषा

Scanned with CamScanner

पैट्रसन के विचारानुसार व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए जो निर्देशन प्रदान करते है उसे व्यक्तिगत या वैयक्तिक निर्देशन कहते हैं चाहे वह सामूहिक रूप से क्यों नहीं दिया जा रहा है।

2.6.1 व्यक्तिगत निर्देशन के प्रकार

उपरोक्त परिभाषाओं को आधार बनाकर हम व्यक्तिगत निर्देशन के दो प्रकार निर्धारित कर सकते हैं:-

1. व्यक्तिगत रूप से प्रदान किया जाने वाला निर्देशन।
2. व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए प्रदान किया जाने वाला निर्देशन।

यहाँ हम पुनः स्पष्ट कर दें कि व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिये दिया जाने वाला निर्देशन सामूहिक रूप से भी प्रदान किया जा सकता है।

2.6.2 व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्त्व

हमें निम्नांकित कारणों से व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकता अनुभव होती है-

1. **व्यक्ति विशेष की आवश्यकता को समझने के लिए** -व्यक्तिगत निर्देशन व्यक्ति विशेष की आवश्यकता को समझने के लिए अति महत्त्व पूर्ण है। व्यक्ति विशेष को किस प्रकार की परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है, तथा उसे इन परिस्थितिओं में किस प्रकार के निर्देशन की आवश्यकता है यह दोनों बातें व्यक्तिगत निर्देशन के माध्यम से ही समझी जा सकती हैं।
2. **व्यक्तिग विशेष की समस्याओं के निजी रूप से समाधान के लिए** - व्यक्ति की अनेक समस्याऐं इस प्रकार की होती हैं जिनका समाधान समूह के साथ नहीं हो सकता ऐसी स्थिति में भी व्यक्ति को वैयक्तिक निर्देशन की आवश्यकता होती है जिससे वह समस्याओं का निजी समाधान प्राप्त कर सके।
3. **व्यक्तिगत गोपनीयता के लिए** - हम जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का निजी जीवन होता है तथा उसकी अनेक समस्याऐं भी गोपनीय होती हैं अतः उसकी समस्याओं एवं उनके समाधान को गोपनीय बनाये रखने के लिए व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकता होती है।

व्यक्तिगत निर्देशन का महत्त्व

व्यक्तिगत निर्देशन के महत्त्व को हम निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत स्पष्ट करेंगे-

1. **समस्या का तुरन्त समाधान** -समस्या का तुरन्त समाधान करने के लिए व्यक्तिगत निर्देशन अत्यन्त महत्त्व पूर्ण है इसमें व्यक्ति अपने निर्देशक से सीधे सम्पर्क करके अपनी समस्या का त्वरित समाधान प्राप्त कर सकता है।
2. **समस्या का पूर्ण समाधान** - व्यक्ति की समस्या का पूर्ण समाधान व्यक्तिगत निर्देशन के द्वारा ही सम्भव है। इसमें व्यक्ति एवं निर्देशक के बीच में कोई बाधा नहीं होती

Scanned with CamScanner

वंचित रह जायेगी। अतः व्यावसायिक निर्देशन विद्यार्थी में इन सभी भावनाओं का विकास करता है जिससे प्रत्येक व्यवसाय में प्रत्येक व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं का प्रयोग करके उसे उच्च से उच्चतर क्रम पर ले जाये।

6. **आत्मसंतोष प्राप्त करना** -व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा व्यक्ति में सभी प्रकार के गुणों का विकास होता है। उसमें अनेक प्रकार के व्यावसायिक गुणों का विकास हो जाता है। उसमें सभी प्रकार की व्यावसायिक रुचियों का विकास हो जाता है जिससे वह अपनी सम्पूर्ण क्षमता का प्रयोग करता है और जब वह ऐसा करता है तो उसके अनुकूल परिणाम उसे प्राप्त होते हैं जिससे उसे आत्मसंतोष की प्राप्ति होती है।

पिछले पृष्ठों में हमने निर्देशन के मुख्य रूप से 9 प्रकारों के बारे में जाना जिनमें से हमने अपनी आवश्यकताओं के कारण शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन पर विस्तृत चर्चा की। (यद्यपि पैट्रसन ने निर्देशन के 5 प्रकार बताते हुए वैयक्तिक निर्देशन को भी एक प्रकार माना है) लेखक के मतानुसार निर्देशन के पूर्वोक्त सभी प्रकारों को व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से दिया जा सकता है। आगे की पंक्तियों में हम शैक्षिक निर्देशन के व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रकारों का अध्ययन करेंगे।

2.6 व्यक्तिगत निर्देशन : अर्थ

यद्यपि पैट्रसन ने निर्देशन के प्रकारों का वर्गीकरण करते हुए व्यक्तिगत निर्देशन को निर्देशन के मुख्य 5 प्रकारों में सम्मिलित किया है (पृ0सं0 4) पैट्रसन ने व्यक्तिगत निर्देशन को अत्यधिक महत्त्व देते हुए सामाजिक निर्देशन, मनोवेगों से सम्बन्धित निर्देशन तथा अवकाश के समय का सदुपयोग से सम्बन्धित निर्देशन को व्यक्तिगत निर्देशन में सम्मिलित किया है किन्तु लेखक की मान्यता है कि उपरोक्त तीनों कार्यों के अतिरिक्त मनुष्य की अन्य गतिविधियों के लिए अथवा पूर्वोक्त सभी 9 प्रकार के निर्देशन व्यक्तिगत रूप से दिये जा सकते हैं इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि व्यक्तिगत निर्देशन निर्देशन का मुख्य प्रकार न होकर निर्देशन का गौण प्रकार है तथा शैक्षिक, व्यावसायिक आदि निर्देशन के सभी प्रकारों में यह सम्मिलित है। यहाँ पर हम व्यक्तिगत रूप से दिये जाने वाले शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा पैट्रसन के अनुसार व्यक्तिगत निर्देशन के अन्तर्गत आने वाले सामाजिक, मनोवेगात्मक एवं अवकाश सम्बन्धी निर्देशन पर संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

व्यक्तिगत निर्देशन का अर्थ

व्यक्तिगत निर्देशन अथवा वैयक्तिक निर्देशन को हम दो प्रकार से परिभाषित कर सकते हैं प्रथमतः किसी भी प्रकार का निर्देशन जब किसी व्यक्ति विशेष को अकेले में प्रदान किया जाता है तब उस निर्देशन को हम व्यक्तिगत निर्देशन कहते हैं।

Scanned with CamScanner